बहेलिया समय में स्त्री

वजनी गुप्त

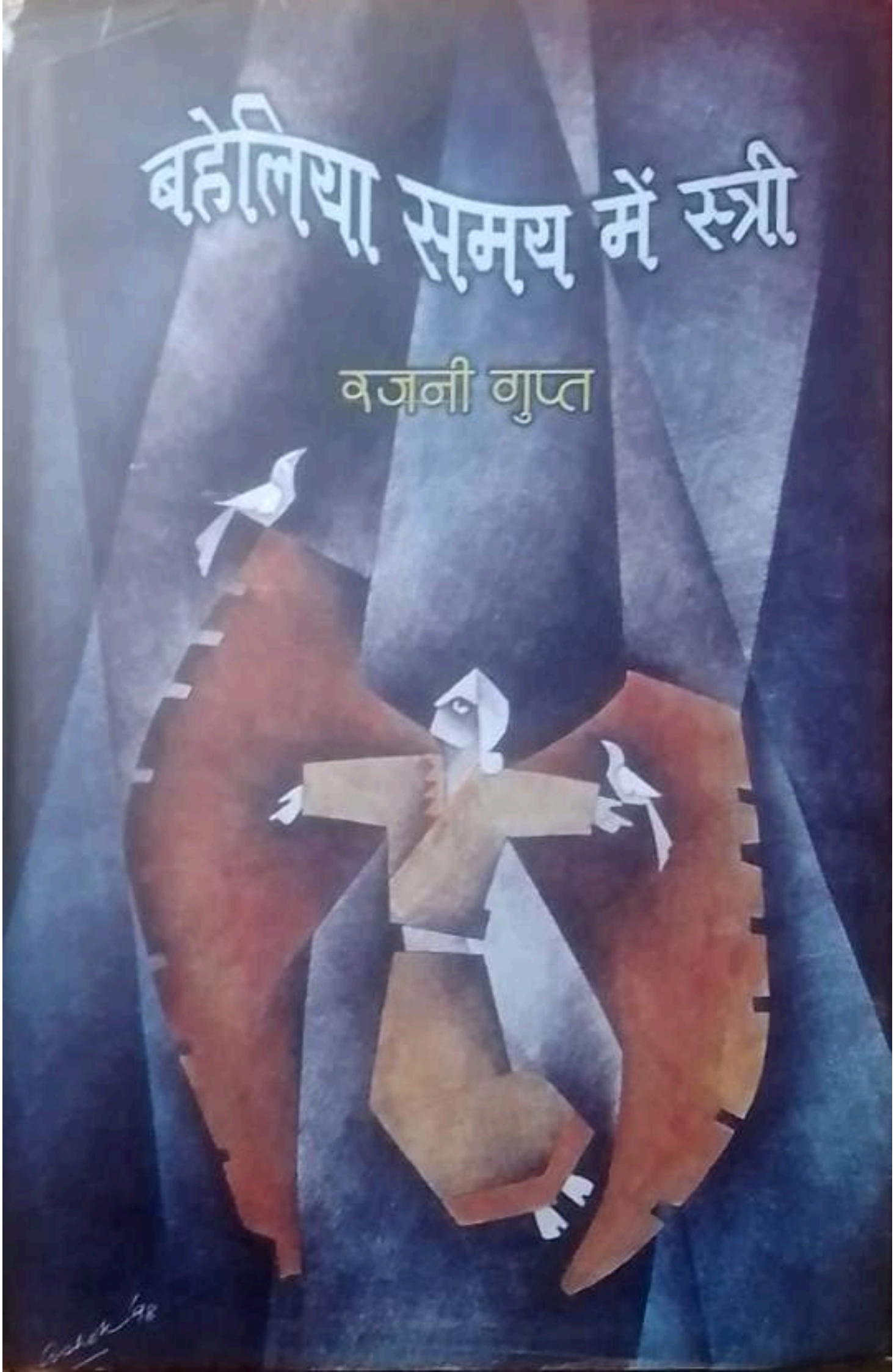

ISBN 978-93-84115-34-0

© रजनी गुप्त

प्रकाशक
शिल्पायन
10295, लेन नं. 1, वैस्ट गोरखपार्क,
शाहदरा, दिल्ली-110032
दूरभाष : 011-22326078

मूल्य
400.00

संस्करण
2016

आवरण-चित्र
अशोक भौमिक

आवरण-सज्जा
उमेश शर्मा

मुद्रक
रुचिका प्रिण्टर्स, दिल्ली-32

BAHELIYA SAMAY MAIN STRI (Article)
by Rajni Gupt

अनुक्रम

बहेलिया समय में स्त्री	13
स्त्री मुक्ति के वही सवाल—ये कहां आ गए हम यूं ही साथ-साथ...	17
जीविका की जद्दोजेहद से जूझते हुए	22
हमारे लिए ये आम रास्ता क्यों नहीं?	26
छूना है आसमान	31
युवा लड़कियों का मंत्रजाप—हू केयर्स	34
कहां जा रहा है हमारा पाठक समाज?	38
आज के इस बहेलिया समय में	41
बेलगाम आजादी के पंखों पर सवार है नई सदी की स्वतंत्र स्वायत्त लड़की	45
चौखटे फलांगते कदम	49
ऑनर नहीं, हॉरर किलिंग	53
सखि, ये शहर बड़े जालिम हैं	57
ये दिलवा स्टाइलिश मांगता यार	61
कर्फ्यू खुलने की बाट जोहती स्त्रियां	65
अब उन्हें खौफ नहीं मजहब की पाबंदियों का	69
मनमीत कायदे का हो तो काहे नहीं करेंगे?	73
देह से विदेह होते जाने के द्वन्द्व	79
आजादी के आंदोलन में मशाल जलाती स्त्रियां	83
पिंजड़े में बंद हैं बेचेहरा स्त्रियां	86
आदिवासी समाज : यहां औरतें लांछित नहीं होतीं	90
उस पार न जाने क्या होगा?	93
आखिर क्यों होती हैं शारीरिक-मानसिक हिंसा की शिकार ये कामकाजी स्त्रियां?	99
इस-उस मोड़ पर मिलेंगे ऐसे दोमुंहे सांप	105
आधी दुनिया के लिए गर्व	109

बाल साहित्य के प्रति उदासीन लेखिकाएं!
कैद में उदास जिंदगियां 112
अपनी ही प्रजाति के खिलाफ इतना विद्वेष क्यों? 115
बूढ़ी आंखों से : सूखकर रेती हुए हैं स्नेह के निर्झर 119
रुपैया पाऊं, तो जहाज बनाऊं 123
क्यों रहें सिर्फ हाउस वाइफ बनकर? 127
हमें भी देखें प्यार से! 131
महिला पत्रकारिता में उभरती नित नई चुनौतियां 135
विदेशों में कैदी की तरह जीवन जीती स्त्रियां 138
फ्रेमबद्ध स्त्रियां 143
धुंध और अंधेरे के बीच होती सुबह और शाम 146
मौजूदा समय के सवाल और लेखिकाएं 151
इसलिए महिलाएं उठाती हैं कलम 156
स्त्री लोकतंत्र : अस्मिता से आत्मनिर्णय तक 160
163

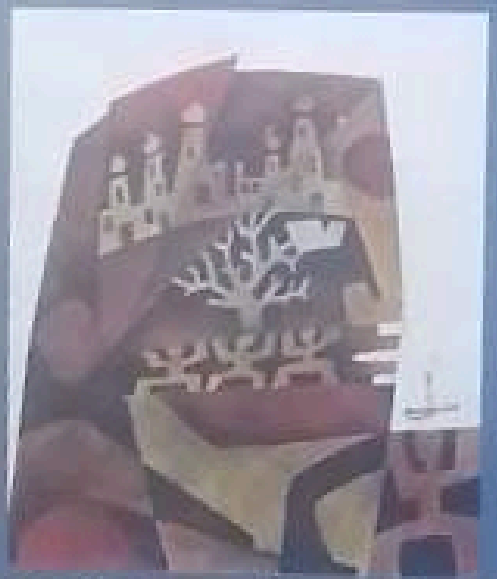

आवरणचित्र : प्रख्यात चित्रकार अशोक भौमिक (साभार)